ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 353-356

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

अमृतलाल नागर : भारतीय जनजीवन के चितेरे कथाकार

डॉ0 ऊषा पाठक Email : aaryvrat2013@gmail.com

Received- 28.11.2020, Revised- 01.12.2020, Accepted - 04.12.2020

सारांश– ***प्रेमचंदोत्तर हिंदी साहित्य को जिन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं से संवारा है, उनमें अमृतलाल नागर का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। किस्सागोई के धनी अमृतलाल नागर ने कई विधाओं से साहित्य को समृद्ध किया। अमृतलाल नागर ने कहानी और उपन्यास के अलावा नाटक, रेडियो नाटक, रिपोर्ताज, निबंध, संस्मरण, अनुवाद, बाल साहित्य आदि के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।***

मानव जीवन की व्यापक भूमि को समेटने वाले नागर जी का व्यक्तित्व सच पूछा जाए तो एक उन्मुक्त और जीवन्त कथा लेखक का व्यक्तित्व है। उन्होंने अपने जीवन में इतना भोगा कि अब असफलताएं उन्हें इतना निराश नहीं करती इसे उन्होंने स्वयं स्पष्ट किया है–""मैं उस चींटी की तरह हूँ जो बार बार गिरने के वावजूद चढ़ती है।हार जीत की बाजी प्राणों को उमंग देखकर लड़ाती तो है पर हार अब उतना निराश नहीं करती।दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना यह उक्ति सच्ची है।"[1]

कुंजीभूत शब्द– हिंदी साहित्य, साहित्यकारों, रचनाओं, विधाओं, समृद्ध।

सह प्राध्यापक–हिन्दी विभाग (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक

साहित्य जगत में उपन्यासकार के रूप में सर्वाधिक ख्याति प्राप्त इस साहित्यकार का हास्य–व्यंग्य भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। 1932 से वे निरंतर लेखनरत रहे। शुरूआत में मेघराज इंद्र के नाम से कविताएं लिखीं। 'तस्लीम लखनवी' नाम से व्यंग्यपूर्ण स्केच व निबंध लिखे तो कहानियों के लिए अमृतलाल नागर मूल नाम रखा।

'बूँद और समुद्र' उपन्यास उत्तर भारतीय जनजीवन से संबंधित एक बृहद उपन्यास है, जिसमें उपन्यासकार ने समुद्र रूपी समाज में बूँद रूपी व्यक्ति के अस्तित्व का महत्व आँकने का प्रयास किया है। बूँद व्यष्टि का प्रतीक है और समुद्र समष्टि का, इन दोनों के समन्वय की समस्या ही इस उपन्यास का दृष्टिकोण है। नागर जी लिखते है––''व्यक्ति अवश्य रहे, पर उसके व्यक्तिवादी चिन्तन में भी सामाजिक दृष्टिकोण का रहना अनिवार्य है। मैं अकेला भी हूं पर बहुजन के साथ भी हूं दुःख, सुख, शान्ति, अशान्ति आदि व्यक्तिगत अनुभव है, पर ये समाज में प्रत्येक व्यक्ति के है।अतएव हमें मानना चाहिए कि समाज एक है–व्यक्ति तो अनेक है।"[2]

'शतरंज के मुहरे' नागर जी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें नागर जी ने अवध राज्य के सामाजिक तथा राजनैतिक घटना चक्र के माध्यम से 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के यथार्थ का सजीव चित्रण किया है। तत्कालीन समाज व्यवस्था में उत्पीड़ित अवध की प्रजा की स्थिति का चित्रण करते हुए लिखा है––'' सर्वत्र ठगी और लूटपाट का बोलबाला था। शाही आमिल, अमले, शहर के रईस,छोटे अमले, जनसाधारण आमतौर पर अपने सुख–विलास के लिए कुछ भी कर डालते थे। हिंदुओं में कुलीन ठाकुर और ब्राह्मण बहुपत्नी वादी थे।"[3] आपकी भाषा सहज, सरल दृश्य के अनुकूल है। मुहावरों, लोकोक्तियों, विदेशी तथा देशज शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया गया है। भावात्मक, वर्णनात्मक, शब्द चित्रात्मक शैली का प्रयोग इनकी रचनाओं में हुआ है। नागर जी किस्सागोई में माहिर थे। 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नागर जी ने पुराने युग की सामन्ती समाज का चित्रण किया है। इस उपन्यास में कुलवधू के सुहाग के नूपुर और नगरवधु के नृत्य घुँघरुओं का संघर्ष ही उपन्यास की मूल सम्वेदना है,किन्तु यह संघर्ष एक पक्षीय और व्यक्तिगत बन गया है।नागर जी ने इस उपन्यास में पुरूष प्रधान समाज पर आक्षेप किया है जो स्त्री को विभिन्न कष्ट देकर अपने को श्रेष्ठ समझने की भूल करता है। सामन्ती समाज ने वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देकर समाज में स्त्रियों के स्थान का हनन किया। इसका शीर्षक 'सुहाग के नुपुर' एक स्त्री के सुहाग के प्रतीक बनकर प्रारम्भ से अन्त तक एक नायक की भांति कार्य करते है। अन्त में उसके समक्ष यह सत्य उदघाटित हो जाता है कि "पुरूष जाति के स्वार्थ और दम्भ के कारण सारे पापों का उदय होता है उसकी स्वार्थ वृत्ति के नाते ही नारी जाति पीड़ित है। एकांगी दृष्टिकोण से सोचने के कारण ही पुरूष न तो स्त्री को सती बनाकर सुख दे सका और न ही वैश्या बनाकर।इसलिए वह स्वयं झकोले खाता है और खाता रहेगा। नारी के रूप में न्याय रो रहा है। महाकवि! उसके आंसुओं में अग्नि–प्रलय भी समाई है और जल प्रलय भी।"[4]

प्रस्तुत उपन्यास में नगरवधू माधवी सदैव कुलवधू कन्नगी के सारे

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

अधिकार प्राप्त करने के पश्चात भी अपने पैरों में सुहाग के नूपुर पहनने में सफल नहीं होती है।

'सुहाग के नूपुर' उपन्यास पर टिप्पणी करते हुए डॉ. रणवीर रांगरा ने लिखा है–

यह कथ्य और कला दोनों की दृष्टि से एक उत्ष्ट रचना है।इसके कथानक की प्रेरणा लेखक को पहली शताब्दी ईसवी के तमिल कवि इलांगोवन के अमर काव्य 'शिलप्प दिकारम' से मिली है। पर अपनी सृजन प्रतिभा से इसे मौलिक और स्पृहणीय रचना बना दिया है।"[5]

यद्यपि गम्भीर उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के कारण कहीं–कहीं उनके उपन्यासों में बहसों के दौरान तात्विक विवेचन के लम्बे–लम्बे प्रंसग भी आ जाते हैं। तथापि वे अपनी कृतियों को उपदेशात्मक या उबाऊ नहीं बनने देते। रोचक कथाओं और ठोस चरित्रों की भूमिका से ही विचारों के आकाश की ओर भरी गयी इन उड़ानों को साधारण पाठक भी झेल लेते हैं। उनके साहित्य का लक्ष्य भी साधारण नागरिक है, अपने को असाधारण मानने वाला साहित्यकार या बुद्धिजीवी समीक्षक नहीं। समाज में खूब घुल–मिलकर अपने देखे–सुने और अनुभव किये चरित्रों, प्रसंगों को तनिक कल्पना के पुट से वे अपने कथा साहित्य में ढालते रहे हैं। अपनी आरम्भिक कहानियों में उन्होंने कहीं–कहीं स्वछन्दतावादी भावुकता की झलक दी है। किन्तु उनका जीवन बोध ज्यों–ज्यों बढ़ता गया त्यों–त्यों वे अपने भावातिरेक को संयत और कल्पना को यथार्थाश्रित करते चले गये। अपने पहले अप्रौढ़ उपन्यास महाकाल में सामाजिक यथार्थ के जिस स्वच्छ बोध का परिचय उन्होंने दिया था, निहित स्वार्थ के विविध रूपों को साम्राज्यवादी उत्पीड़न, जमींदारों, व्यापारियों द्वारा साधारण जनता के शोषण, साम्प्रदायिकतावादियों के हथकंडों आदि को बेनकाब करने का जो साहस दिखाया था, वह परवर्ती उपन्यासों में कलात्मक संयम के साथ–साथ उत्तरोत्तर निखरता चला गया।

'सात घूँघट वाला मुखड़ा' उपन्यास में इतिहास और कल्पना का समन्वय बड़ी ही खूबसूरती से किया है। स्वयं नागर जी का विश्वास है कि "यह इतिहास नहींःऐतिहासिक चरित्र प्रधान उपन्यास है। तिथियों और घटनाओं के क्रम में परिवर्तन कर दिये गये है क्योंकि बेगम समरू का इतिहास प्रमाणिक होते हुए भी उसकी बहुचर्चा के कारण किवदंतियों से भरा हुआ है।"[6]

'बूँद और समुद्र' तथा 'अमृत और विष' जैसे वर्तमान जीवन पर लिखित उपन्यासों में ही नहीं, 'एकदा नैमिषारण्ये' तथा 'मानस का हंस' जैसे पौराणिक–ऐतिहासिक पीठिका पर रचित सांस्तिक उपन्यासों में भी उत्पीड़कों का पर्दाफाश करने और उत्पीड़ितों का साथ देने का अपना व्रत उन्होंने बखूबी निभाया है।

'एकदा नैमिषारण्ये' पौराणिक पृष्ठभूमि पर आधारित एक धार्मिक उपन्यास है। नागर जी ने इस उपन्यास में तत्कालीन इतिहास और संस्कृति का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। इतिहास अतीत से जुड़ा है, किन्तु ऐतिहासिक चेतना अतीत के रंगों का वर्तमानीकरण भी है और सापेक्षिक प्रत्यंकन भी। इस उपन्यास के लिखने के सम्बन्ध में नागर जी ने इस बात का उल्लेख किया है कि––"अपनी मद्रास यात्रा में कपालेश्वर के मन्दिर में एक तमिल कथावाचक के मुँह से नैमिषारण्य का नाम सुनकर इस उपन्यास को लिखे जाने का विचार उनके मन में आया था। नैमिष आन्दोलन की भूमिका सम्बन्धी खोजबीन ने इस दिशा में उन्हें कार्य करने को प्रोत्साहित किया।"[7]

अतीत को वर्तमान से जोड़ने और प्रेरणा के स्रोत के रूप में प्रस्तुत करने के संकल्प के कारण ही 'एकदा नैमिषारण्ये' में पुराणकारों के कथा–सूत्र को भारत की एकात्मकता के लिए किये गये महान सांस्तिक प्रयास के रूप में, तथा 'मानस का हंस' में तुलसी की जीवन कथा को आसक्तियों और प्रलोभनों के संघातों के कारण डगमगा कर अडिग हो जाने वाली 'आस्था के संघर्ष की कथा' एवं उत्पीड़ित लोकजीवन को संजीवनी प्रदान करने वाली 'भक्तिधारा के प्रवाह की कथा' के रूप में प्रभावशाली ढंग से अंकित किया है।

नागर जी ने चौरासी हजार सन्तों के उस पौराणिक सम्मेलन का राष्ट्रीय महत्व आँका है।

स्वयं नागर जी के शब्दों में––"नैमिष आंदोलन को ही मैंने वर्तमान भारतीय या हिन्दू संस्ति का निर्माण करने वाला माना है। वेद पुनर्जन्म,कर्मकाण्डवाद,उपासनावाद और ज्ञान मार्ग आदि का अंतिम रूप से समन्वय नैमिषारण्य में ही हुआ है। अवतारवाद रूपी जादू की लकड़ी घुमाकर परस्पर विरोधी संस्तियों को घुलामिला कर अनेकता में एकता स्थापित करने वाली संस्ति का उदय नैमिषारण्य में हुआ है और यह काम मुख्यतः एक राष्ट्रीय ष्टि से ही किया गया था।"[8]

विद्या के धनी नागर जी ने निरंतर स्वाध्याय जारी रखा और साहित्य, इतिहास, पुराण, पुरातत्त्व, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान आदि विषयों पर और हिंदी, गुजराती, मराठी, बांग्ला एवं अंग्रेजी आदि भाषाओं पर अधिकार हासिल कर लिया था उनके साहित्य में उपरोक्त सभी भाषाओं के शब्द मिलते है।

'मानस का हंस' उपन्यास हिन्दी के प्रसिद्ध महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन पर आधारित एक ऐतिहासिक उपन्यास है। मानस का हंस नागर जी की एक ऐसी कथा कृति है "जो टालस्टाय, जेम्स ज्यावस, बर्जिनिया बुल्फ,मैक्सिम गोर्की, विमल

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

मिश्र और प्रेमचन्द सबकी भाषिक और संवेदनात्मक विशेषताओं को समाहित किये हुए है।"[9]

अमृतलाल नागर ने कुछ समय तक मुक्त लेखन एवं 1940 से 1947 ई. तक कोल्हापुर में हास्यरस के प्रसिद्ध पत्र 'चकल्लस' का संपादन किया। इसके बाद वे बंबई एवं मद्रास के फिल्म क्षेत्र में लेखन करने लगे। दिसंबर, 1953 से मई, 1956 तक वे आकाशवाणी, लखनऊ में ड्रामा, प्रोड्यूसर, रहे और उसके कुछ समय बाद स्वतंत्र रूप लेखन करने लगे। किस्सागोई में माहिर नागरजी के साहित्य का लक्ष्य साधारण नागरिक रहा। अपनी शुरुआती कहानियों में उन्होंने कहीं–कहीं स्वछंदतावादी भावुकता की झलक दी है।

अमृतलाल नागर हिन्दी के गम्भीर कथाकारों में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। इसका अर्थ ही यह है कि वे विशिष्टता और रंजकता दोनों तत्वों को अपनी कृतियों में समेटने में समर्थ हुए हैं। उन्होंने न तो परम्परा को ही नकारा है, न आधुनिकता से मुँह मोड़ा है। उन्हें अपने समय की पुरानी और नयी दोनों पीढ़ियों का स्नेह समर्थन मिला और कभी–कभी दोनों का उपालंभ भी मिला है। आध्यात्मिकता पर गहरा विश्वास करते हुए भी वे समाजवादी हैं, किन्तु जैसे उनकी आध्यात्मिकता किसी सम्प्रदाय कठघरे में बन्दी नहीं है। उनकी कल्पना के समाजवादी समाज में व्यक्ति और समाज दोनों का मुक्त स्वस्थ विकास समस्या को समझने और चित्रित करने के लिए उसे समाज के भीतर रखकर देखना ही नागर जी के अनुसार ठीक देखना है।

इसीलिए बूँद अर्थात व्यक्ति के साथ ही साथ वे समुद्र अर्थात समाज को नहीं भूलते। अपने लेखक–नायक अरविन्द शंकर के माध्यम से उन्होंने कहा है–" जड़–चेतन, भय, विष–अमृत मय, अन्धकार–प्रकाशमय जीवन में न्याय के लिए कर्म करना ही गति है। मुझे जीना ही होगा, कर्म करना ही होगा, यह बन्धन ही मेरी मुक्ति भी है। इस अन्धकार में ही प्रकाश पाने के लिए मुझे जीना है।"[10] नागर जी आरोपित बुद्धि से काम नहीं करते, किसी दृष्टि या वाद को जस का तस नहीं लेते। अमृतलाल नागर हिंदी के अतिविशिष्ट लेखकों में से एक हैं। उनके उपन्यास हों, उनकी कहानियाँ हों या कि 'गदर के फूल', 'ये कोठेवालियाँ' जैसी विशिष्ट .तियाँ हों जिनकी परंपरा तब तक के हिंदी संसार में नहीं ही थी, उनकी यह सभी .तियाँ उन्हें एक ऐसा महानतम रचनाकार सिद्ध करती हैं जिसकी जड़ें अपनी जमीन, अपनी परंपरा में गहराई तक धँसी थीं।

'नाच्यों बहुत गोपाल' नागर जी का मौलिक तथा नवीन शैली शिल्प में रचित सामाजिक उपन्यास है। नागर जी ने मेहतर कहे जाने वाले लोगों की मानसिकता,जीवन,समस्याओं आदि की करुणामयी और रोमांचक झांकी ह्रदयग्राही कथा के ताने बाने से बुनकर उपन्यास के रूप में एक गम्भीर .ति प्रस्तुत की है। मेहतर जाति के सम्बन्ध में वे स्वीकार करते है––"मेहतर कोई जाति नहीं। विजेता ने विजितों को दास बनाकर उनसे जबरदस्ती मल–मूत्र उठवाना आरम्भ किया। भंगी समाज में बहुत से छोटे छोटे पराजित राजकुलों के वंशधर भी मौजूद है। विजेता ने विजितों के दम्भ को कुचलकर किस मानसिक गति में नाली के कीड़े की तरह बहा दिया।"[11]

नागर जी का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है 'भूख' दुर्योग से जिसकी साहित्य जगत में बहुत चर्चा नहीं हुई। उन्हीं के शब्दों में "–सन् 1943 के बंग दुर्भिक्ष में मनुष्य की चरम दयनीयता और परम दानवता के दृश्य मैंने कलकत्ते में अपनी आँखों से देखे थे। सियालदह स्टेशन के प्लेटफार्म, कलकत्ते की सड़कों के फुटपाथ ऐसी बीभत्स करुणा से भरे थे कि देख–देखकर आठों पहर जी उमड़ता था। कलकत्ते वालों को उन दृश्यों से घिर जाने के कारण अपना शहर काटता था। इतनी बड़ी भूख के वातावरण में लोगों से मुँह में कौर लेते नहीं बनता था। बहुत–से ऐसे भी थे जिनके ऊपर उन .श्यों का उतना ही असर होता था जितना चिकने घड़े पर पानी का होता है। 'दुनिया दुरंगी मकारा सराय, कहीं खूब–खूबां कहीं हाय–हाय।' यही हाल था। "[12]

धनाभाव में अथवा अपने से शक्तिशाली के द्वारा भूखे रहने पर विविश किए जाने और स्वेच्छा से व्रत लेकर निराहार रहने में, बात एक होने पर भी जमीन–आसमान का अंतर होता है। पहले अनुमान में बड़ी घुटन, बेबसी और विद्रोह–भावना पाई, दूसरे में सहनशक्ति बढ़ी और चेतना गहराई।

नागर जी की जिंदादिली और विनोदी वृत्ति उनकी कृतियों को कभी विषादपूर्ण नहीं बनने देती। 'नवाबी मसनद' और 'सेठ बांकेमल' में हास्य व्यंग्य की जो धारा प्रवाहित हुई है, वह अनंत धारा के रूप में उनके गंभीर उपन्यासों में भी विद्यमान है और विभिन्न चरित्रों एवं स्थितियों में बीच–बीच में प्रकट होकर पाठक को उल्लासित करती रहती है। नागर जी के चरित्र समाज के विभिन्न वर्गों से गृहीत हैं। उनमें अच्छे बुरे सभी प्रकार के लोग हैं, किन्तु उनके चरित्र–चित्रण में मनोविश्लेषणात्मकता को कम और घटनाओं के मध्य उनके व्यवहार को अधिक महत्त्व दिया गया है। नागर जी के उपन्यासों में कथा का संगठन इस ढंग से किया गया है कि उसमें नाटकीयता, रोचकता, सरसता, सत्यता, यथार्थ, कल्पना सभी का आकर्षक सम्मिश्रण है। उनके कथा–संगठन में कहीं भी बिखराव या बनावटीपन देखने को नहीं मिलता।

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

"किसी उपन्यास की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि कहानी कहने वाले ने कहानी ठीक–ठीक सुनाई है या नहीं अनावश्यक बातों को तूल तो नहीं दिया है।.....सौ बात की एक बात वह शुरू से अन्त तक सुनने वाले की उत्सुकता जाग्रत रखने में नाकामयाब तो नहीं रहा।"[13]

कहा जा सकता है कि नागर जी की जगत् के प्रति दृष्टि न अतिरेकवादी है, न हठाग्रही। एकांगदर्शी न होने के कारण वे उसकी अच्छाइयों और बुराइयों, दोनों को देखते हैं। किन्तु बुराइयों से उठकर अच्छाइयों की ओर विफलता को भी वे मनुष्यत्व मानते हैं। जीवन की क्रूरता, कुरूपता, विफलता को भी वे अंकित करते चले हैं, किन्तु उसी को मानव नियति नहीं मानते। जिस प्रकार संकीर्ण आर्थिक स्वार्थों और मृत धार्मिकता के ठेकेदारों से वे अपने लेखन में जूझते रहे, उसी प्रकार मूल्यों के विघटन, दिशाहीनता, अर्थहीनता आदि का नारा लगाकर निष्क्रियता और आत्महत्या तक का समर्थन करने वाली बौद्धिकता को भी नकारते रहे। इसीलिए उन्होंने अपने समय का मुकम्मल यथार्थ रचने के साथ साथ ऐसी भी बहुत सारी कृतियाँ हमें दीं जिनमें भविष्य के ठेठ भारतीय स्वप्न विन्यस्त मिलते हैं। जाहिर है नागर जी भारतीय जनजीवन के आशावान स्वप्नों के चितेरे रचनाकार थे जिनसे उनके परवर्ती रचनाकारों को प्रेरणा मिलती रहेगी।

अपने शोध आलेख के माध्यम से अन्त में मैं नागर जी के अनुभूति जगत को देखते हुए यही कहना चाहूँगी कि नागर जी ने यथार्थ में जो कुछ भी अनुभव किया है उसे ही शब्दों का रूप देकर अपना रचना संसार लिखा है।कहीं भी उनकी रचनाओं में कोई बनावट नहीं है बल्कि उनकी उपन्यासों और कहानियों को पढ़कर पाठक उसमें खो सा जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नीर–क्षीर अमृतलाल नागर पृष्ठ संख्या 5.
2. बूँद और समुद्र अमृतलाल नागर पृष्ठ संख्या 603.
3. शतरंज के मोहरे अमृतलाल नागर पृष्ठ संख्या 117.
4. सुहाग के नूपुर अमृतलाल नागर पृष्ठ संख्या 267.
5. गंगनांचल फक्कड़ इंसान और बावला किस्सागो (लेख) पृष्ठ11.
6. सात घूँघट वाला मुखड़ा अमृतलाल नागर प्राक्कथन पृष्ठ से
7. अमृत मंथन संपादक–डॉ. शरद नागर पृष्ठ 100.
8. एकदा नैमिषारण्ये अमृतलाल नागर अपनी बात, पृष्ठ 13.
9. आजकलध्डॉ.शम्भूनाथ चतुर्वेदी जून,1983 पृष्ठ 8.
10. अमृत मंथन संपादक–डॉ. शरद नागर पृष्ठ 122.
11. नाच्यो बहुत गोपाल अमृतलाल नागर पृष्ठ 343,344.
12. भूँख अमृतलाल नागर अपनी बात, पृष्ठ15.
13. साहित्य का साथी आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी पृष्ठ 82.

*****